National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2015; 1(3): 96-97
© 2015 NJHSR
www.sanskritarticle.com

नेत्रपाल
शोधच्छात्र (वेद),
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रीयसंस्कृत-विद्यापीठ, (मानित-विश्वविद्यालय)
नई दिल्ली

Correspondence:
नेत्रपाल
शोधच्छात्र (वेद),
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रीयसंस्कृत-विद्यापीठ, (मानित-विश्वविद्यालय)
नई दिल्ली

विवाह में मधुपर्क का रहस्य

नेत्रपाल

संस्कार शब्द की व्युत्पत्ति सम् उपसर्ग पूर्वक 'डुकृञ्' धातु से घञ् प्रत्यय करके की गई है। आङ्ग्ल भाषा में संस्कार शब्द के लिए 'सिरेमनी' (Ceremony) तथा लैटिन भाषा में (Carrimonia) शब्द का प्रयोग होता है। संस्कार शब्द का प्रयोग अनेक अर्थों में होता है। मीमांसक[1] यज्ञाङ्गभूत पुरोडाश आदि की विधिवत् शुद्धि से इसका आशय समझते हैं। संस्कृत साहित्य में इसका प्रयोग शिक्षा, संस्कृति, प्रशिक्षण[2], सौन्दर्य, पूर्णता, व्याकरण-सम्बन्धी शुद्धि[3], संस्करण, परिष्करण[4], शोभा, आभूषण[5], प्रभाव, स्वरूप, स्वभाव, क्रिया, छाप[6], स्मरणशक्ति पर पड़ने वाला प्रभाव[7], शुद्धि क्रिया, धार्मिक विधि विधान[8], विचार, भावना, धारणा, कार्य का परिणाम, क्रिया की विशेषता आदि अर्थों में हुआ है।[9]

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि संस्कार शब्द के साथ विलक्षण अर्थों का योग हो गया है जो इसके दीर्घ इतिहास क्रम में इसके साथ संयुक्त हो गए हैं। संस्कार शब्द से ही उसके स्वरूप का ज्ञान होता है कि आत्मा में, मन में, बुद्धि में जो मलिनता है उसे दूर कर, सम्पूर्ण व्यक्तित्व का परिष्कार करके पूर्णता की प्राप्ति होती है। सविधि संस्कारों के अनुष्ठान से संस्कृत व्यक्ति में विलक्षण तथा अवर्णनीय गुणों का प्रादुर्भाव हो जाता है।[10]

पारस्करगृह्यसूत्र में तेरह (13) गोतमस्मृति में चालीस (40) तथा व्यासस्मृति में सोलह (16) संस्कारों का विधान मिलता है। इन संस्कारों में विवाह का महत्वपूर्ण स्थान है। अधिकतर गृह्यसूत्र का आरम्भ ही विवाह संस्कार से होता है। विवाह समस्त गह्यियज्ञों और संस्कारों का उत्पत्ति केन्द्र है। विवाह स्वयं एक यज्ञ माना जाता है। जो व्यक्ति विवाह करके गृहस्थ जीवन व्यतीत नहीं करता था उसका यज्ञ में अधिकार नहीं था। कहा भी गया है – **"अयज्ञीयो वा एष योऽपत्निकः।"**[11]

अविवाहित पुरुष आधा माना जाता है, उसका आधा भाग पत्नी होती है। **"अथो अर्धो वा एष आत्मनः यत् पत्नी।"**[12]

व्यक्ति के विकास के लिए विवाह अनिवार्य माना जाता है। इसे किसी भी दृष्टि से हीन नहीं समझा जाता।

शास्त्रों में चार प्रकार के आश्रम कहे गए हैं। (1) ब्रह्मचर्याश्रम, (2) गृहस्थाश्रम, (3) वानप्रस्थ तथा (4) सन्यासाश्रम। ब्रह्मचर्याश्रम का पालन करता हुआ मनुष्य विवाह के बाद गृहस्थाश्रम में प्रवेश करे। बिना आश्रम के एक पल भी नहीं रहना चाहिए, ऐसा शास्त्रों में कहा गया है। **अनाश्रमी न तिष्ठेत क्षणमेकमपि द्विजः** एक आश्रम का पालन कर दूसरे आश्रम में प्रवेश करना चाहिए। आश्रमादाश्रमगच्छेदेष धर्मः सनातनः। ब्रह्मचर्याश्रम, वानप्रस्थाश्रम और संन्यासाश्रम इन तीनों आश्रमों का आश्रय स्थान, इसी तरह देव ऋण, पितृ ऋण और काम की सिद्धि को देने वाला होने के कारण गृहस्थाश्रम को प्रधान माना गया

है, ऐसा कश्यप जी ने कहा है 'अथातः संप्रवक्ष्यामि गृहस्थाश्र-ममुत्तमम्। य आधारोऽन्याश्रमाणां भूतानां प्राणिनां तथा। ऋणत्रयच्छेदनकारी धर्मकामार्थसिद्धिम्।

मधुपर्क का रहस्य

मधुपर्क नाम से ही ज्ञात होता है कि जिससे दो व्यक्तियों के बीच मधुर सम्बन्ध स्थापित हो। श्वसुर वर का जो प्रथम सत्कार करता है वह है मधुपर्क देना। यह अत्यन्त दुर्लभ सम्मान था जो समाज के विशिष्ट व्यक्तियों तथा सर्वाधिक प्रतिष्ठित सम्बन्धियों के लिए सुरक्षित था। इसके अधिकारी पारस्कर गृह्यसूत्र में ये छः व्यक्ति बताए गए हैं - आचार्य ऋत्विग्वैवाह्यो राजा प्रियः स्नातक इति।[13] वर के सत्कार में आसन, पाद्य, अर्घ्य, आचमन के बाद मधुपर्क दिया जाता है। यह मधुपर्क मधु, घी और दधि इन तीन पदार्थों का मिश्रण है। वर कन्या के पिता से मधुपर्क लेकर - **'ॐ मित्रस्य त्वा चक्षुषा प्रेतीक्षे'** मन्त्र से मधुपर्क को देखता है। उसके बाद - **'ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यां प्रतिगृह्णामि'**[14] मन्त्र से मधुपर्क को बाएँ हाथ में ग्रहण करके - **'ॐ नमः श्यावास्यायस्वस्तये यत्र आविद्धंतते निष्कृतन्तामि'[15]** मन्त्र से दाहिने हाथ की अनामिका से अंगूठे को मिलाकर तीन बार मधुपर्क का आलोडन कर पृथ्वी पर तीन बार छींटा दें यदि मधुपर्क में कोई अन्य पदार्थ जैसे अपद्रव आदि हो तो वह भी निकाल दें। इसके बाद - **'ॐ यन्मधुनो मधुव्यम् परमम् रूपमन्नाद्यम्। तेनाहं मधुनो मध्व्येन परमेण रूपेणान्नाद्येन परमो मधव्योऽन्नादोऽसनीति'[16]** इस मन्त्र से तीन बार मधुपर्क का प्राशन करता है।

मधु से भावना की जाती है कि वाणी में मधुरता रहे। मधुर स्वभाव से ही गृहस्थ जीवन अच्छा चलता है। यदि वाणी में कटुता हो तो गृहस्थ जीवन में शिथिलता आ जाती है। घी बल को देने वाला है। यदि शरीर में बल रहेगा तभी वह धन इत्यादि कमाकर गृहस्थ जीवन को सही तरीके से चला पाएगा। दधि में शीतलता का गुण पाया जाता है। मनुष्य का स्वभाव शीतल रहे क्योंकि क्रोध के कारण भी गृहस्थ जीवन में शिथिलता आ जाती है। अतः वाणी में मधुरता, शरीर में बल और स्वभाव में शीतलता हो - यह तीनों गुण भी मधुपर्क में पाए जाते हैं।

मधुपर्क में दधि, मधु और घृत तीनों वस्तुएँ पवित्र हैं और अनेक रोगों का नाश करने वाली मानी जाती हैं। इन तीनों वस्तुओं के भक्षण से अशुभ विचार के भाव दूर होते हैं। शरीर में पवित्रता आती है। शुद्ध पवित्र मनुष्य को ही दान देना और लेना शास्त्रों में लिखा है। मधुपर्क का तीन बार भक्षण करने से मन, वाणी और शरीर में पवित्रता आती है।

इस संस्कार से वर में योग्यता का आधान किया जाता है। क्योंकि श्रीमद्भगवद्गीता में भी कहा गया है - दातव्यमिति यद्दानं दीयतेऽनुपकारिणे। देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्त्विकं स्मृतम्।

सन्दर्भग्रन्थाः -

[1]प्रोक्षणादिजन्यसंस्कारो यज्ञाङ्गपुरोडाशेष्विति द्रव्यधर्मः। वाचस्पत्यम् 5, पृ. 5188

[2]निसर्गसंस्कारविनीत इत्यसौ नृपेण चक्रे युवराजशब्दभाक्। रघुवंश 3/35

[3]संस्कारत्येव गिरा मनीषी तया स पूतश्च विभूतिश्च। कुमारसम्भव 1/28

[4]प्रयुक्तसंस्कार इवाधिकं लभौ। रघुवंश 3/18

[5]स्वभावसुन्दरं वस्तुन संस्कारमपेक्षते। शाकुन्तल 7/33

[6]यन्नवे भाजने लग्नः संस्कारो नान्यथा भवेत्। हितोपदेश 1/8

[7]संस्कारजन्यं ज्ञानं स्मृतिः। तर्कसंग्रहः

[8]कार्यशरीरसंस्कारः पावनः प्रेत्य चेह च। मनुस्मृति 2/26

[9]फलानुमेयः प्रारम्भाः संस्काराः पाक्त्रा इव। रघुवंश 1/20

[10]आत्मशरीरान्यतरनिष्ठो विहितक्रियाजन्योऽतिशयविशेषः संस्कारः। वीरमित्रोदय, सं. प्र. पृ. 132

[11]तैत्तिरीयब्राह्मण 2/2/2/6

[12]तैत्तिरीयब्राह्मण 2/9/4/7

[13]पा. गृ. सू. 1/3/1

[14]पा. गृ. सू. 1/3/17

[15]पा. गृ. सू. 1/3/18

[16]पा. गृ. सू. 1/3/20